हर शहर हर गली रहती अब वीरान है,

ये देख आज जानवर कुछ हो रहा हैरान है,

कल तक जो रखते थे इंसान इन्हें कैद में,

आज खुद बैठे हैं चार दीवारी की कैद में,

अब खुली वादियों में रहता दिन बर कोई शोर नहीं,

वो प्रकृति की सुंदरता का मंडराता कोई चोर नहीं,

डरते थे वे पेड़ जो कटने से हर पल,

बेख़ौफ़ सी ज़िंदगी वे जी रहे हैं आज कल,

कईं अरसे बाद हवा ने अपना रंग दिखाया है,

काले धुंए के साए से अपने को अलग कराया है,

वो नदियों में बहता पानी हो रहा कुछ साफ है,

ज़हरीले रसायनों के ज़ुल्म से मिल रहा इंसाफ है,

हां माना कि लोगों में कुछ तन्हाई सी छाई है,

पर कईं बरसों बाद आज प्रकृति भी मुस्कुराई है |

Name : SOURABH

Class : BVSC & AH (2ND YEAR)

Roll no: V-2018-03-052